पुस्तक समीक्षा

भारतीय समाजशास्त्र समीक्षा
8(1) 127–129, 2021
© 2020 Indian Sociological Society
Reprints and permissions:
in.sagepub.com/journals-permissions-india
DOI: 10.1177/2349139620970304
http://bss.sagepub.in

सुधा सीतारमण तथा अनंदिता चक्रवर्ती (सं.) (2020), ***रिलिजन एंड सेक्युलरिज़्म: रेकॉन्फ़िगरिंग इस्लाम इन कंटेम्परेरी इंडिया*****, हैदराबाद: ओरीएंट ब्लैकस्वान प्राइवेट लिमिटेड, पृष्ठ xviii+222, मूल्य ₹745, ISBN: 978-9390122-00-4**

सुधा सीतारमण एवं अनंदिता चक्रबर्ती द्वारा संपादित समीक्षाधीन पुस्तक, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर के मानविकी और समाज विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित एक संगोष्ठी में प्रस्तुत शोध लेखों पर आधारित है। पुस्तक विशेष रूप से 'धर्म के समाजशास्त्र' पर शोधकर्ताओं के एक छोटे समूह का अकादमिक योगदान है, जो सेमिनार में प्रस्तुत शोध-पत्रों के माध्यम से प्रतिभागियों द्वारा विषय पर सैद्धांतिक विचार-विमर्श और विवेचना पर आधारित है।

विषय पर प्रारंभिक चर्चा करते हुए जे.पी.एस. ओबराय अफ़ग़ानिस्तान में किए गए अपने फील्ड कार्य को संदर्भित कर, मूल प्रश्न 'धर्म का अध्ययन क्यों' पर गूढ़ विचार विमर्श करते हैं। पुस्तक में कुल सात अध्याय हैं, जो विशिष्ट रूप में इस्लाम के समाजशास्त्र से जुड़े मुद्दों पर केन्द्रित हैं और समकालीन भारत में इस्लाम के विविध स्वरूपों एवं धार्मिक अल्पसंख्यक दर्जे को समाजशास्त्रीय दृष्टि से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

प्रथम अध्याय में समाजशास्त्रीय दृष्टिपात करते हुए आदित्य कपूर प्रकाश डालते हैं कि किस तरह भारतीय मुसलमान अपनी 'मुस्लिम' पहचान को मजबूती से बनाये रखनेव उसे अधिक सुस्पष्ट करने का प्रयास करते हैं और कैसे मुस्लिम अपने प्रथागत दायित्वों, धार्मिक कर्तव्यों और पैगम्बर की परंपराओं के मध्य एक समुचित संतुलन बैठाने का प्रयास भी करते हैं। द्वितीय अध्याय में अलीना सेबेस्टियन, धर्म और कानून पर समन्वित दृष्टिपात करते हुए व्याख्या करने का प्रयास करती हैं कि पंथनिरपेक्षता स्थानीय स्तर पर कैसे आकार लेती है और केरल के मप्पिला मुसलमान में मातृस्थानक 'थरवाड' के स्वरूप का वर्णन किया गया है।

तृतीय अध्याय में सुधा सीतारमण ने प्रकाश डाला है कि सार्वजनिक जीवन में किस तरह पंथनिरपेक्ष सिद्धांतों को धार्मिक स्वतंत्रता के संदर्भ में अपनाया एवं उसका पालन किया जाता है। चतुर्थ अध्याय में केरल के मप्पिला मुसलमानों की विभिन्न परंपराओं की चर्चा करते हुए हाशिम व्याख्या करते हैं कि किस तरह वे अपने रोजमर्रा के जीवन और दैनिक जीवन के मुद्दों का हल उन परंपराओं में पाते हैं। पंचम् अध्याय में शाहुल अमीन केरल के जमात-ए-इस्लाम हिन्द और सालिडेरिटी यूथ मूवमेंट की विचारधारा, कार्यों और सक्रियता पर दृष्टिपात करते हैं। षष्टम् अध्याय में सुचन्द्र घोष एवं अनंदिता चक्रबर्ती भारत में मुस्लिम पर्सनल लॉ के प्रश्नों को नृवंशविज्ञान के संदर्भ में प्रस्तुत करने का प्रयास

करते हैं। सप्तम् अध्याय ने आर. संतोष केरल में मुस्लिम सुधारवादी संगठन, मुजाहिद आंदोलन के संदर्भ में प्रकाश डाला है।

सैद्धांतिक विमर्श हेतु पुस्तक में प्रकाशित लेखों को चार खंडों में संरचित किया गया है, जिनमें प्रथम खंड में भारतीय इस्लाम पर चर्चा है, दूसरा खंड समकालिक सीमाएं पर केन्द्रित है, तीसरा खंड पंथनिरपेक्ष, पंथनिरपेक्षता और पंथनिरपेक्षी को सुस्पष्ट करने का प्रयास करता है तथा चतुर्थ खंड इस्लामी सार्वजनिक मंडल पर दृष्टिपात करता है। वस्तुतः इन चारों खंडों में मुख्यरूप से इस्लाम पर मानवशास्त्रीय, नृवंशविज्ञानी या विस्तृत समन्वित दृष्टि में समाज वैज्ञानिक सैद्धांतिक परिचर्चा और विचार-विमर्श प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

पुस्तक में प्रकाशित लेख, विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश भारत में, जहां इस्लाम का एक लंबा इतिहास है और मुसलमानों को एक अल्पसंख्यक समुदाय के रूप में वर्गीकरण पर समन्वित प्रकाश डालते हैं। समकालीन समय में मुस्लिम समुदायों और इस्लाम के विभिन्नि मुद्दों के आस-पास अकादमिक चर्चा और विचार विमर्श किया गया है। वस्तुतः 9/11 के पश्चात् धर्म आधारित चर्चाएं विशेषकर इस्लाम की राजनीतिक संदर्भ में सर्वव्यापी चर्चा, आतंकवाद के विरुद्ध युद्ध तथा विश्व स्तर पर धार्मिक राजनीति के आरोहण के साथ बहस आधुनिक दुनिया में एक अभिशाप जैसा बन गई है।

एकात्म का भाव चिरकालीन है और यह धार्मिक स्वरूप में अपरिवर्तनीय भी रहा है, जिसे प्रायः अकादमिक जगत और मीडिया के साथ-साथ मुस्लिम समुदायों के प्रतिनिधियों और प्रतिद्वंदियों द्वारा भी धर्म के संदर्भ में स्थापित किया जाता रहा है। किन्तु सांप्रदायिक और कट्टरवादी विचारधारा द्वारा धार्मिक पंथनिरपेक्षता पर 'कतिपय उदाहरण-सहित तथाकथित तथ्य' इस्लाम की और उसपर चुनौतियां के रूप में प्रस्तुत किये जाते हैं। प्रस्तुत पुस्तक में प्रकाशित लेख विश्व की सबसे बड़े लोकतांत्रिक व्यवस्था में उन कतिपय एवं तथाकथित तथ्यों से सुरक्षा एवं संरक्षण का प्रयास करते हैं।

धर्म, नागरिक समाज और राज्य के बीच अंतःसंबंधों का अन्वेषण-विश्लेषण करते हुए पुस्तक के लेख देश में इस्लाम के लंबे इतिहास के साथ-साथ मुस्लिम समुदाय की अल्पसंख्यक रूप में पहचान का भी सार्थक विश्लेषण करते हैं। नृवंशविज्ञान अध्ययनों पर आधारित लेख देश के विभिन्न राज्यों, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल से लेकर कर्नाटक और केरल तक धार्मिक विविधता, सामुदायिक सक्रियता एवं नागरिक भागीदारी के संदर्भों के साथ-साथ ऐतिहासिक-धार्मिक स्थलों के मुद्दों पर बहस और मुस्लिम समुदाय की मातृस्थानिक प्रथाओं के बदलते प्रतिमानों तथा मुस्लिम महिलाओं द्वारा मुस्लिम पर्सनल लॉ को संवैधानिक न्याय व्यवस्था के पटल पर मानव अधिकारों के संदर्भ में रखने के प्रयासों का भी विश्लेषण करते हैं।

पुस्तक के लेख आधुनिक समाज, पंथनिरपेक्षी उदार शासन के तर्क के परे सम-सामायिक इस्लाम को समझने को असंभावना के रूप निरुपित करते हुए पंथनिरपेक्षता पर सार्थक बहस आगे बढ़ाने में सहायता करते हैं। साथ ही पुस्तक के लेख इस्लाम के विस्तृत स्वरूपों, जीवन शैली, बदलते सुधारवादी प्रतिमानों तथा दैनंदिनी अवधारणाओं को समझाने का भी सामूहिक और सहयोगात्मक सफल प्रयास करते हैं।

पुस्तक के माध्यम से प्रयास किया गया है कि औपनिवेशिक काल के बाद देश और राष्ट्र के संदर्भ में जो संवैधानिक ढांचा पंथनिरपेक्षीय प्रजातंत्रीय व्यवस्था का 'हम' भारत के लोगों ने अपनाया है, उसमें मुस्लिम समुदाय की स्थिति, प्रस्थिति एवं भूमिका की विस्तृत चर्चा प्रस्तुत की गई है। रुढ़िवादी दृष्टि में पंथनिरपेक्षवाद का विचार ही धार्मिक वास्तविकताओं के साथ असहज तनाव में प्रस्तुत होता है। जबकि भारत के संविधान की उद्देशिका में ही प्रावधानित पंथनिरपेक्षता राज्य की भूमिका को वस्तुतः सशक्त एवं परिमार्जित तो करती ही है साथ ही सभी धर्मों पर समान दृष्टि रखते हुए और बिना किसी प्रकार के भेदभाव किये विधायी-शासन-प्रशासन-न्याय को उच्च मापदंडों वाले समतामूलक समाज निर्माणपथ की ओर संस्थागत भी करती है।

जैसा कि पुस्तक के शीर्षक से ही स्पष्ट है भारत में इस्लाम पर दृष्टिपात करने वाले लेखों का ही चयन किया गया है जो न केवल विषय की वस्तु व उसकी सीमा में सुस्पष्ट है, अपितु विषय पर विश्लेषण की दृष्टि से आवश्यक भी है। तथापि भारत के संविधान में प्रावधानित पंथपिरपेक्षिता को अपने-अपने कट्टरवादी नीहितार्थ समाज पर बलात् थोपने और विशेषकर भारत में धर्म के समाजशास्त्र पर सार्थक विचार-विमर्श हेतु लोक-व्यवस्था एवं संवैधानिक सदाचार के अधीन सभी धर्मों की परस्पर सामाजिक कल्याणकारी धार्मिक-लौकिक क्रियाकलापों, प्रथाओं व परंपराओं की अंतःकरण के और धर्म को अबाध रूप में मानने, आचरण और प्रचार करने की स्वतंत्रता के संदर्भों में आनुभाविक अध्ययनों की आवश्यकता अधिक प्रासंगिक है।

हालांकि पंथनिरपेक्ष, पंथनिरपेक्षता और पंथनिरपेक्षी मुद्दों पर देश में आजादी के पश्चात् जितनी समाज-वैज्ञानिक समझ विकसित हुई है, उतनी ही कठिनाईयों और हिंसात्मक अंतःविरोधों का भी हमारे समाज ने सामना किया है। प्रकाशित लेखों में समाज वैज्ञानिक अध्ययनों में प्रमाणिक उदाहरण देते हुए व्यापक और विश्वस्तरीय चर्चा के लिए अवधारणात्मक निहितार्थ भी प्रस्तुत करने का सार्थक प्रयास किया गया है। पुस्तक में सांप्रदायिकता और कट्टरवादिता वाली विचारधाराओं को नकारते हुए और पंथनिरपेक्षता के सकारात्मक पहलुओं की सराहना करते हुए उन बहुआयामी पक्षों को मजबूती से प्रस्तुत किया गया है, जो धर्म की मानव अधिकारिता और समाज कल्याणकारी दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं।

यह पुस्तक समाजशास्त्र, नृविज्ञान, सामाजिक-मनोविज्ञान, विधिशास्त्र, समाज विज्ञान से जुड़े विभिन्न विषयों एवं धार्मिक अध्ययनों के शोधकर्ताओं एवं उच्च शिक्षा संस्थाओं में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं एवं शोधार्थियों के लिए तो रुचिकर एवं मूल्यवान होगी ही, साथ ही रोजमर्रा के जीवन में सामने आने वाली धर्म और पंथनिरपेक्षता से जुड़ी सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक चुनौतियों और उनमें नाजुक संतुलन को बनाने व समझने में भी सहायक होगी।

दीपक कुमार वर्मा

आचार्य, समाजशास्त्र एवं संकायाध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान अध्ययनशाला,
डॉ. बी. आर. अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय,
डॉ. अम्बेडकर नगर (महू), मध्य प्रदेश।
ई-मेल: dkvbrauss@gmail.com